शिक्षा में पुस्तकालय की भूमिका : एक अध्ययन

मनीष सिंह

किसी देश का विकास उस देश के शिक्षा, अनुसंधान और औद्योगिक कार्यों के विकास पर निर्भर करता है, जिस देश में शिक्षा का स्तर जितना अच्छा व आधुनिक होगा उतनाही वह देश विकास करेगा। शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए सूचना की आवश्यकता होती है। सूचनायें शिक्षा के स्तर के विकास में भी महत्वपूर्ण घटक की तरह कार्य करती है एवं सूचनाओं के एक प्रमुख स्रोत पुस्तकालय होते है।

पुस्तकालयों की रचना में पाठ्य सामग्री एक प्रमुख तत्त्व है। अतएव पुस्तकालय में पाठ्य सामग्री का निरन्तर संग्रह किया जाता है जिसका उद्देश्य जन–जन में ज्ञान को संचारित करना है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो ज्ञान प्राप्त करता है तथा उसे दूसरों तक प्रसारित करता है। वास्तव में किसी तथ्य से परिचित होना ज्ञान कहलाता है। ज्ञान शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'अनुभूति' 'विश्वास'। जब व्यक्ति को किसी तथ्य का बोध होता है तब वह उस पर विश्वास करता है और तब तथ्य ज्ञान का रूप ले लेता है। ज्ञान प्राप्ति प्रक्रिया के दो पक्ष होते हैं, प्रथम जिज्ञासु तथा दूसरा ज्ञातव्य। दोनों में सम्बन्ध स्थापित होने पर ज्ञान की उत्पत्ति होती है। जिज्ञासु सदैव मनुष्य होता है तथा ज्ञातव्य के अन्तर्गत वस्तुओं एवं विचारों को रखा जाता है। जब जिज्ञासु (मनुष्य)किन्ही ज्ञातव्यों (विचारों अथवा वस्तुओं) की जानकारी प्राप्त कर उन्हें स्वीकृत कर लेता है तब यह कहा जाता है कि ज्ञान का सृजन हुआ।

अधिकाधिक ज्ञातव्यों से परिचित होने पर मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि होती है। मनुष्य द्वारा नवीन ज्ञातव्यों से परिचित होने का क्रम शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर विभिन्न माध्यमों से निरन्तर चलता रहता है। ज्ञान को संरक्षित करने में पुस्तकालयों का महत्वपूर्ण योगदान है।

शिक्षा में पुस्तकालय की भूमिका :

जिस प्रकार भोजन में नमक का महत्व होता है उसी प्रकार हर शिक्षण पद्धति में पुस्तकालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकालयों की भूमिका निम्न संदर्भों में दृष्टव्य है:

शोध एवं विकास

शोध एवं विकास से संम्बन्धित कार्य विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों एवं औद्योगिक संस्थाओं में निरन्तर निर्बाध गति से चलते रहते हैं। इन संस्थानों से जुड़े पुस्तकालय सम्बन्धित विषयों में शोध में सशक्त भूमिका निभाते हैं। आज शोध आधुनिक समाज का जीवन है। देश का विकास देश के शोध कार्य एवं उसकी सफलता पर निर्भर है। इस हेतु

* प्राध्यापक, शिक्षा–संकाय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,वाराणसी।

पुस्तकालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पुस्तकालय विविध प्रकार की सेवाओं के द्वारा शोधकर्ता के समय, धन एवं शक्ति की बचत कर शोध के विकास में सहयोग करते है।

संस्कृति का संरक्षण :

पुस्तकालय साहित्य एवं संस्कृति के संरक्षण का भी प्रमुख केन्द्र है। पुस्तकालय में प्रलेखों, साहित्य एवं संस्कृति का संग्रह एवं संरक्षण वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए किया जाता है। समाज तथा राष्ट्रीय प्रगति के लिए साहित्य एवं संस्कृति का संग्रह एवं संरक्षण अति आवश्यक है। सार्वजनिक पुस्तकालयों का कर्तव्य है कि वे समाज की रचनात्मक कृतियों का संरक्षण करें, जो कि हजारों वर्षों से सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संग्रहित की गई है।

सूचना संप्रेषण :

सूचना संप्रेषण केन्द्र के रूप में पुस्तकालय की महत्वपूर्ण भूमिका है। हमारी सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति के लिए प्रत्येक क्षेत्र में सूचना सेवा अनिवार्य है। इसके अभाव में किसी भी अनुसंधानिक कार्य की सम्पन्नता सम्भव नहीं है। समाज के सभी वर्गों के लिए विद्यार्थी, शोधकर्ता, शिक्षक, प्रशासक, प्रबन्धक, आदि सभी को किसी न किसी प्रकार की सूचना की आवश्यकता होती है। सूचनाओं के सम्प्रेषण में पुस्कालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

जनविश्वविद्यालय :

जनपुस्तकालयों को विश्वविद्यालय की संज्ञा दी गई है, क्योंकि पुस्तकालय में वे सभी गुण विद्यमान होते हैं जो एक विश्वविद्यालय में होते हैं। पुस्तकालय आधुनिक समय की सूचना संबंधी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं। इस लिए यह आवश्यक है कि पुस्तकालय को उच्च स्तरीय एवं समृद्ध बनाने का प्रयास किया जाय, ताकि उच्च गुणवत्तायुक्त शोध कार्य में ये सहयोगी हो सके।

निष्कर्ष

समाज के प्रत्येक नागरिक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य रहा है। शिक्षा प्रदान करने की कई पद्धतियां विकसित हुई हैं जैसे औपचारिक शिक्षण पद्धति, अनवरत शिक्षण पद्धति, प्रौढ़ शिक्षण पद्धति, दूरस्थ शिक्षण पद्धति, सभी शिक्षण पद्धतियों का उद्देश्य एक ही है कि हम किस प्रकार समाज के सभी वर्गों को सस्ती, सुलभ एवं मानक युक्त शिक्षा उपलब्ध करवाएं। इन शिक्षण पद्धतियों में पुस्तकालय की भूमिका अहम् है। पुस्तकालय इन शिक्षण संस्थानों के हृदय के रूप में कार्य करते हैं तथा शिक्षण कार्य में पूर्ण सहयोग प्रदान करते है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ज्ञान, सूचना एवं विद्वता का प्रसार करना, सर्वांगीण विकास हेतु सामाजिक मूल्यों का निर्माण एवं विकास करना एवं तकनीकी और रोजगारोन्मुखी शिक्षण–प्रशिक्षण उपलब्ध कराना है। इन सभी मुख्य उद्देश्य को प्राप्त कराने में पुस्तकालय अहम् भूमिका निभाता है।

संदर्भ ग्रन्थ :

- पाण्डेय, के0पी0, (1995): भारतीय शिक्षा की समस्यायें, वर्तमान सन्दर्भ, अमिताश प्रकाशन,
- रंगनाथन, एस0 आर0 (1973): न्यू एजूकेशन एण्ड स्कूल लाइब्रेरी इ0डी0.2,
- व्यास, एस0डी0 (1993): लाइब्रेरी एण्ड सोसाइटी, जयपुर, पंचहेड,
- सहाई, एस0एन0 (1973): लाइब्रेरी एण्ड कामून्यटी,
- हिल, मिचेल0 डब्लू0, (2005): द इम्पैक्ट ऑफ इनफारमेशन ऑन सोसाइटी: एन इक्जामिनेशन ऑफ इट्स नेचर. वैल्यू एण्ड यूजेस इ0डी0.2 मंचन0 केजी0 सौर0।